

है, सुविधा सदा बचाता आया, मैं बलिपथ का अंगारा हूँ, जीवन ज्वाला जलाता आया।

पत्रकारिता को लोकतंत्र का मुखर प्रहरी बनाने में अहिंसा, सत्य एवं समानता को लेकर एक विचारधारा प्रस्फुटित हुई, इस विचारधारा को जैन सिद्धांतों के अनुगामी विभिन्न साधु भगवंतों एवं जैन श्रावकों ने पल्लवित किया और यही विचार धारा आगे चलकर जैन पत्रकारिता के रूप में विख्यात हुई। जैन धर्म की अहिंसा के आधार पर पत्रकारिता के सिद्धांतों को जनसामान्य के सामने लाने का प्रयास समय-समय पर विभिन्न विद्वानों ने किया इसमें मुनि कांतिसागर से लेकर अगरचंद नाहटा एवं बाबू लाभचंद छजलानी से लेकर राजेन्द्र माथुर तक के विद्वान पत्रकारों का अविस्मरणीय योगदान है।

जैन धर्म प्राणी मात्र के कल्याण की कामना करता है। जैन पत्रकारिता का यही उद्देश्य है कि जहां तक हो सके पत्रकारिता के माध्यम से अहिंसा के विचारों को प्रतिपादित करना ताकि कम से कम हिंसा हो। 'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयः' की सुन्दर भावना इस सिद्धांत में प्रकट होती है। कटुता का कलह संसार में विषमता का वातावरण घोलता है इसको हिंसा से नहीं मिटाया जा सकता। अहिंसा के द्वारा ही एक मात्र शांति स्थापित की जा सकती है और यही अहिंसा प्राणी-मात्र पर दया की भावना से अभिभूत हो उसे निर्भरता का पाठ पढ़ाती है।

महात्मा गांधी ने जीवदया की भावना को जैन धर्म के घेरे से निकालकर प्राणीमात्र के धर्म से जोड़ दिया। सत्याग्रह में हमेशा उन्होंने जीवदया पर जोर दिया। यही कारण था कि हजारों क्रांतिकारी आंदोलन होने के बाद भी देश को आजादी नहीं मिल सकी, वहीं सत्याग्रह के प्रयोग से आजादी का पथ प्रशस्त हुआ।

जैन पत्रकारिता शाकाहार की भावना को भी उद्घोषित करती है। विभिन्न वैज्ञानिक सिद्धांतों से हजारों वर्ष पूर्व जैन तीर्थंकरों ने शाकाहार की महिमा जैन ग्रंथों में लिखी।

जैन पत्रकारिता में शाकाहार की भावना को विशेष बल दिया है। जैन विश्वभारती विश्व विद्यालय लाडनू एवं कोलकाता विश्वविद्यालय में जैन दर्शन पर आधारित पत्रकारिता में कहा है कि शाकाहार का सम्बंध व्यक्ति के विचार से जुड़ा है। पत्रकारिता में शुचिता को बनाए रखने के लिए शाकाहार अत्यंत आवश्यक है।

अर्थात् 'जैसा खावे अन्न वैसा होवे मन' की भावना का प्रभाव पत्रकारिता में अवश्य पड़ता है। शाकाहार व्यक्ति को आत्मिक-शांति के साथ सात्विक विचार प्रदान करता है वहीं साथ ही पत्रकार शाकाहार के माध्यम से विश्वशांति में अपना अनूठा योगदान देता है।

आज की पत्रकारिता ग्लेमर एवं चटपटी खबरों से भरी रहती है। अधिकांश अखबार हिंसात्मक समाचारों को प्रमुखता

आधुनिक युग में जैन पत्रकारिता एवं उसका योगदान

भारत में २९ जनवरी १७८० को हिक्की गजट एवं द बंगाल एसियाटिक गजट के प्रकाशन के साथ ही पत्रकारिता युग का सूत्रपात हुआ। १७८५ में मद्रास कोरियर, १७९५ में मद्रास गजट एवं १८१८ में बंगाल गजट प्रारंभ हुआ। ३० मई १८२६ को उदन्त मार्तण्ड अखबार ने पत्रकारिता के क्षेत्र में विशेष स्थान तय किया। १८३८ में टाईम्स ऑफ इण्डिया के पश्चात् पत्रकारिता के क्षेत्र में एक लम्बी शृंखला स्थापित हुई और इसी शृंखला ने देश की आजादी में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया तभी तो अकबर इलाहाबादी ने कहा था 'खिंचो न कमानो को, न तलवार निकालो जब तोप मुकाबिल हो तो अखबार निकालो, अर्थात् बंदूक की गोलियों से दो चार आदमी मरते हैं किंतु अखबार की एक खबर से हजारों लाखों की भावनाएं आहत होती हैं। पत्रकारिता के क्षेत्र में ज्यों-ज्यों बाढ़ आती गई त्यों-त्यों पत्रकारिता लोकतंत्र के सजग प्रहरी के रूप में मुखर होती गयी। देश के अभ्युत्थान के लिए निर्धनता, भूखमरी और विषमता से संघर्ष करना ही पत्रकारिता का धर्म, कर्म और मर्म है। समाचार पत्र संसार की बड़ी ताकत है, उन पर सबसे बड़ी जिम्मेदारी लोकतंत्र के निर्वहन की है, इसी कारण इसे प्रजातंत्र के चौथे स्तंभ के रूप में माना जाता है। पत्रकारिता के संदर्भ में कहा जाता है कि सूली का पथ ही सीखा

देते हैं, वहीं जैन पत्रकारिता हिंसा को नकारती है, अहिंसा के सिद्धांतों को बढ़ावा देती है। कहा जाता है कि अखबार में छपे हुए विचार जन-जन के विचार होते हैं अतः पत्रकारिता में अहिंसा से ओतप्रोत विचारों को ही स्थान मिलना चाहिए ताकि समाज का वातावरण समरसता से युक्त होकर जनकल्याणकारी बने।

बदलते हुए परिदृश्य में पत्रकारिता ने एक व्यावसायिक स्थान ले लिया। आज पत्रकारिता एक मिशन न होकर व्यवसाय बन गया। ऐसे में पत्रकार एवं सम्पादक के मन में भी परिग्रह की वृत्ति पैदा हुई। जबकि पत्रकारिता में अपरिग्रह को विशेष महत्व मिलना चाहिए। पत्रकार एवं साधु समान होते हैं। जैन पत्रकारिता अपरिग्रह की भावना पर विशेष बल देती है ताकि समाज का दर्पण उससे प्रभावित न हो। परिग्रह की विशेषता होती है कि उससे मोह उत्पन्न होता है एवं जहां से पत्रकारों को कुछ प्राप्त हुआ वे उसका विशेष ध्यान करने लगते हैं ऐसे में निष्पक्ष पत्रकारिता संभव नहीं है। अपरिग्रहवृत्ति ही निष्पक्ष पत्रकारिता का दायित्व निर्वहन कर सकती है।

आजादी के पूर्व के अखबारों के सम्पादक एवं पत्रकार अपरिग्रही होकर अपने कर्तव्य के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित थे, उन्हें अंग्रेज शासकों का प्रलोभन नहीं डिगा सका। अपरिग्रह ही आज के युग की प्रथम आवश्यकता है। जैन पत्रकारिता ने जैन सिद्धांतों के महत्वपूर्ण सूत्र अपरिग्रह को अपनाकर एक विशेष आयाम तय किए जिसके आधार पर आगामी पीढ़ियां एक स्वस्थ पत्रकारिता को बढ़ावा दे सकेंगी।

जैन पत्रकारिता में 'जियो और जीने दो' की संस्कृति को विशेष महत्व दिया गया है। आज के युग में विषमता का वातावरण तेजी से बढ़ता जा रहा है। परस्पर ईर्ष्या से पूरी दुनिया त्रस्त है। पड़ोसी-पड़ोसी को सुखी नहीं देखना चाहता, पाश्चात्य सभ्यता के वशीभूत होकर टी.वी. संस्कृति ने मानव मात्र को बहुत दूर कर दिया है। आज हर व्यक्ति चाहता है कि 'घर का टी.वी. चले पड़ोसी की जान जले'। उक्त भावना सम्पूर्ण विश्व को नफरत की आग में धकेल देगी। ऐसी स्थिति में जियो और जीने दो की संस्कृति ही मानवमात्र का कल्याण कर सकती है जिसमें हम सम्पूर्ण विश्व के मंगल की कामना करें, हमारा विकास उसके साथ ही सभी प्राणियों का भी विकास हो। उक्त भावना ही जैन पत्रकारिता को पत्रकारिता के अन्य विधाओं से पृथक कर एक विशिष्ट स्थान पर पहुंचाती है।

जैन पत्रकारिता में शिक्षा को विशेष महत्व दिया है। शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति स्वयं की एवं समाज की उन्नति कर सकता है। समाज की उन्नति से ही राष्ट्र का कल्याण संभव है। यही कारण है कि जैन पत्रकारिता में जैन गुरुकुलों, शिक्षा संस्थानों की स्थापना पर जोर दिया गया।

'सा विद्या या विमुक्तये' विद्या वही है जो मुक्ति प्रदान कर सके अर्थात् विद्या से ही अविद्या का नाश होता है। वैदिक ऋषियों ने 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' का उद्घोष कर दर्शाया कि शिक्षा ही मनुष्य को जीवन के अज्ञानरूपी अंधकार से बाहर निकाल सकती है। शिक्षा की प्रासंगिकता भूत-भविष्य और वर्तमान में बराबर बनी रहती है। जैन पत्रकारिता ने शिक्षा की प्रबल विधा को अपने में सम्मिलित कर ज्ञान का एक अभिनव अध्याय जोड़ा इससे जहां जैन पत्रकारिता को चार चांद लगे वहीं शिक्षा के माध्यम से जैन पत्रकारिता एक क्रांतिकारी कदम उठा सकी।

जैन पत्रकारिता में चरित्र को सर्वाधिक बल दिया गया है। एक चरित्रवान व्यक्ति ही राष्ट्र का निर्माण कर सकता है। समाज को आधार प्रदान कर सकता है। वर्तमान में चारित्रिक पतन के दौर में चरित्र बल के द्वारा समाज का पुनः-पुनः उद्धार जैन पत्रकारिता के माध्यम से ही संभव दिखाई देता है।

धन गया कुछ नहीं गया, स्वास्थ्य गया थोड़ा गया, चरित्र गया सब कुछ गया, वाली आस्कर वाइल्ड की उक्त सूक्ति सार्थक सिद्ध होती है। चरित्र समाज का मेरुदण्ड है इसका सुदृढ़ होना अत्यन्त आवश्यक है। जैन पत्रकारिता में विभिन्न मनीषियों ने इसका समावेश कर जैन पत्रकारिता को एक आदर्श रूप दिया।

सफलता वहीं मिलती है जहां सकारात्मक सोच हो। नकारात्मक सोच वाले व्यक्ति प्रायः जीवन में असफल होते हैं। जैन पत्रकारिता ने हमेशा सकारात्मक सोच को बढ़ावा दिया इसमें नकारात्मक विचारों के लिए कोई स्थान नहीं है। निराश एवं हताश व्यक्ति जीवन में रोने के अतिरिक्त और कोई कार्य नहीं कर सकते।

पाश्चात्य कवि शेली की उक्त पंक्तियां इस सिद्धांत पर सार्थक सिद्ध होती हैं— आज पतझड़ है तो कल बसंत जरूर आएगा। सकारात्मक सोच आशावाद पर टिकी हुई है। श्रेष्ठ कवि जयशंकर प्रसाद ने ठीक ही कहा था आशा पर ही आकाश टिका है, अर्थात् आशावाद जैन पत्रकारिता का महत्वपूर्ण सूत्र है और इसी आशावाद से ही सकारात्मक सोच का विकास होता है। यही सकारात्मक चिंतन मनुष्य को मनुष्य से जोड़ते हुए विश्व कल्याण की कामना करता है।

प्रधान सम्पादक, नई विधा, नीमच

